2026 Volume: 02 Issue: 07 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-14

शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाने की दिशा में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

***डॉ. नरेश कुमार**

असिस्टेंट प्रोफेसर, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

Article Received: 29 May 2026

Article Revised: 18 June 2026

Published on: 07 July 2026

***Corresponding Author: डॉ. नरेश कुमार**

असिस्टेंट प्रोफेसर, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.4286

सारांश- शिक्षकों की भूमिका केवल ज्ञान संचरण तक सीमित नहीं है;अपितु वे विद्यार्थियों के समग्र विकास, समाज में सकारात्मक परिवर्तन और राष्ट्रीय उत्थान के सूत्रधार भी होते हैं। वर्तमान समय में जब शिक्षा का परिदृश्य तेजी से बदल रहा है एवं तकनीक, मूल्य, सामाजिक अपेक्षाएं और अधिगम की नवीनतम विधियाँ निरंतर विकसित हो रही हैंतब ऐसे में शिक्षकों की भूमिका और अधिक जटिल, संवेदनशील और उत्तरदायित्वपूर्ण हो गई है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के उद्देश्य सेराष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020के आधार पर तैयार की गईविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023(NCFSE-2023) शिक्षकों को शिक्षा व्यवस्था के केंद्र एवं शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी के रूप में स्थापित करती है।राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023के भाग-ई (Part-E)का तीसरा अध्याय"Enabling and Empowering Teachers" शिक्षकों को एक पेशेवर, विचारशील, नवाचारी और उत्तरदायी अधिगम अगुआ के रूप में परिभाषित करता है। यह अध्याय शिक्षक सशक्तिकरण को केवल प्रशिक्षण या क्षमता निर्माण तक सीमित नहीं रखता;बल्कि उसे एक सतत, सहयोगात्मक, संदर्भ-संवेदनशील और स्वायत्त प्रक्रिया के रूप में देखता है। इसमें शिक्षक की पेशेवर गरिमा, निर्णय लेने की स्वतंत्रता, सतत व्यावसायिक विकास (CPD)औरसहयोगात्मक अधिगम समुदायों की स्थापना जैसे आयामों को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।

प्रस्तुतशोध-आलेख में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक सशक्तिकरण की अवधारणा, उसकी समकालीन प्रासंगिकता, शिक्षकों की भूमिका का नवपरिभाषिकरण, पेशेवर गरिमा की पुनर्स्थापना, स्वायत्तता और निर्णय क्षमता का विस्तार, सतत

व्यावसायिक विकास की सुदृढ़ व्यवस्था तथा नेतृत्व की भूमिका में शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी आदि का व्यापक विश्लेषण किया गया हैतथा साथ ही यह शोध-आलेख इस बात की भी विवेचना है कि जब शिक्षक स्वयं सशक्त होंगे, तभी वे छात्रों को भी आत्मनिर्भर, रचनात्मक, नैतिक और उत्तरदायी नागरिक बना सकेंगे। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत शोधालेखदृढ़ता से इस बात का समर्थन करता है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023एक दूरदर्शी दस्तावेज़ हैजो शिक्षकों को शिक्षा के निष्पादक नहीं;बल्कि निर्माता और नवाचारकर्ता के रूप में देखता है। वास्तव में यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैजो भारतीय विद्यालयी शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और संवेदनशील बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

मुख्य शब्द-*विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023,राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,विद्यालयी शिक्षा, शिक्षक, सतत व्यावसायिक विकास,शिक्षक सशक्तिकरण*

प्रस्तावना

*"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों को 'शिक्षा प्रणाली में मूलभूत सुधारों के केंद्र' में रखती है। इसमें उल्लेखित किया गया है कि- "शिक्षा नीति को सभी स्तरों पर शिक्षकों को हमारे समाज के सबसे सम्मानित और आवश्यक सदस्यों के रूप में फिर से स्थापित करने में मदद करनी चाहिए, क्योंकि वे वास्तव में हमारे नागरिकों की अगली पीढ़ी को आकार देते हैं। इसे शिक्षकों को सशक्त बनाने और उन्हें यथासंभव प्रभावी ढंग से अपना काम करने में मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए"-**विद्यालयी शिक्षा के लिएराष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023, पृष्ठ-559"***

शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली की रीढ़ होते हैं। वे न केवल पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन करते हैं;बल्कि वे विद्यार्थियों के समग्र विकास के मार्गदर्शक, समाज के परिवर्तनकर्ता और राष्ट्र निर्माण के आधारस्तंभ होते हैं। एक प्रभावी, संवेदनशील और जागरूक शिक्षक ही विद्यार्थियों में जिज्ञासा, आत्मविश्वास, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों का विकास कर सकता है। यही कारण है कि शिक्षकों को सशक्त और सक्षम बनाना किसी भी शिक्षा नीति की केंद्रीय प्राथमिकता होनी चाहिए।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) ने इस यथार्थ को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है और शिक्षकों को "राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के केंद्र में" स्थापित किया है। यह नीति मानती है कि जब तक शिक्षक प्रेरित, प्रशिक्षित और समर्थ नहीं होंगे, तब तक शिक्षा प्रणाली में गुणवत्तापूर्ण परिवर्तन की कल्पना अधूरी रहेगी। इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुएविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCFSE-2023) तैयार की गई है।इस रूपरेखाके भाग-ई (Part-E) "Creating a Supportive Ecosystem" के

अंतर्गततीसरा अध्याय "Enabling and Empowering Teachers"विशेष रूप से शिक्षकों की भूमिका, उनकी जरूरतों, उनकी स्वायत्तता और पेशेवर विकास पर केंद्रित है।

यह अध्याय न केवल शिक्षकों की वर्तमान स्थिति की पहचान करता है;बल्कि उनके सशक्तिकरण के लिए दूरदर्शी मार्गदर्शन भी प्रस्तुत करता है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि एक सक्षम शिक्षक वही होता है जिसे निर्णय लेने की स्वतंत्रता, संदर्भ-संवेदनशील प्रशिक्षण, सतत व्यावसायिक विकास, तकनीकी सहायता और सहयोगात्मक वातावरण प्राप्त हो।राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023का यह दृष्टिकोण इस बात का संकेत करता है कि शिक्षक अब केवल अधिगम संचालक नहीं रह गए हैं;बल्कि वे अधिगम के डिज़ाइनर, सहनिर्माता और नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर रहे हैं। प्रस्तुत शोध-आलेख इसी परिप्रेक्ष्य मेंविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023के भाग-ई (Part-E) "Creating a Supportive Ecosystem" के तहत तीसरे अध्याय "Enabling and Empowering Teachers"केआलोक में शिक्षक सशक्तिकरण से जुड़ी अवधारणाओं, नीतिगत प्रावधानों और संभावित प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता हैजो समकालीन विद्यालयी शिक्षा में परिवर्तन का एक मुख्य आधार बन सकता है।

शिक्षक सशक्तिकरण की समकालीन प्रासंगिकता

आज के समय में जब समाज, तकनीक और शिक्षा निरंतर रूप से तीव्र गति से विकसित हो रहे हैं तो ऐसी स्थिति मेंशिक्षकों की भूमिका भी परंपरागत ढांचे से हटकर कहीं अधिक जटिल और महत्वपूर्ण हो गई है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों में न केवल ज्ञान का संचार करें; अपितु उनमें नवाचार, संवेदनशीलता, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व का भी विकास करें।ऐसे में शिक्षक केवल पाठ्यपुस्तक आधारित प्रशिक्षक नहीं रह सकतेउन्हें एक नवाचारी, शोधशील और उत्तरदायी पेशेवर के रूप में तैयार करना अनिवार्य हो गया है। शिक्षक सशक्तिकरण से तात्पर्य है कि-उन्हें आवश्यक स्वायत्तता, पर्याप्त संसाधन, निरंतर प्रशिक्षण और सहयोगी वातावरण प्रदान करनाजिससे वे न केवल प्रभावी शिक्षण कर सकें बल्कि नेतृत्व क्षमता भी विकसित कर सकें।शिक्षक यदि सक्षम और प्रेरित होंगे तो वे छात्रों को जिज्ञासु, रचनात्मक, संवेदनशील और सशक्त नागरिकों में परिवर्तित कर सकेंगे। इसके लिए आवश्यक है कि नीति निर्माताओं, शैक्षिक संस्थानों और समाज द्वारा शिक्षकों को न केवल एक साधन के रूप में देखा जाए; बल्कि उन्हें परिवर्तन के वाहक और साझेदार के रूप में सम्मान दिया जाए।राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 इस दिशा में एक ठोस कदम हैजो शिक्षकों को केंद्र में रखते हुए उन्हें शिक्षा प्रणाली के निर्माणकर्ता, अधिगम अनुभवों के चित्रकार (डिज़ाइनर) और सामाजिक परिवर्तन के संवाहक के रूप में सशक्त बनाती है।

शिक्षक की भूमिका कानवपरिभाषिकरण

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के भाग-ई (Part-E)"Creating a Supportive Ecosystem" का तीसरा अध्याय "Enabling and Empowering Teachers" शिक्षकों की भूमिका को एक परंपरागत ज्ञान-संप्रेषक से हटाकर एक सृजनात्मक अधिगम सहायक, समुदाय के साझेदार और मूल्य-प्रेरितअगुआ के रूप में नवपरिभाषित करता है। इसमें शिक्षक को न केवल पाठ्यवस्तु का जानकार माना गया है;बल्कि एक ऐसे पेशेवर के रूप में देखा गया है जो अधिगम वातावरण को डिज़ाइन करता है, छात्रों की विविधता को समझता है, उनके संदर्भों को पाठ्यक्रम से जोड़ता हैऔर सामाजिक-भावनात्मक विकास का संवाहक होता है।विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023यह भी मानती है कि एक सक्षम शिक्षक ही शिक्षा की गुणवत्ता का निर्धारण कर सकता है। इसके लिए शिक्षकों को निर्णय लेने की स्वायत्तता, सामग्री और विधियों के चयन की स्वतंत्रताऔर स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण योजना बनाने का अधिकार दिया जाना चाहिए। यह उन्हें अपने पेशेवर आत्मसम्मान और रचनात्मकता को अभिव्यक्त करने का अवसर देता है।

इस नवपरिभाषित भूमिका के अंतर्गत शिक्षक को एक सक्रिय अधिगम डिज़ाइनर के रूप में देखा गया हैजो विद्यार्थियों के साथ संवाद करता है, सह-निर्माण करता है और अधिगम को आनंददायक, अर्थपूर्ण एवं समावेशी बनाता है। साथ ही शिक्षक अब अधिगम समुदाय का अभिन्न अंग हैंजहाँ वे अन्य शिक्षकों, अभिभावकों, स्थानीय समुदाय और शिक्षा अधिकारियों के साथ मिलकर कार्य करते हैं।विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023की यह सोच न केवल शिक्षक को सशक्त बनाती है;बल्कि शिक्षा को सामूहिक उत्तरदायित्व और सहभागिता की प्रक्रिया के रूप में पुनर्स्थापित करती है।

शिक्षक की पेशेवर पहचान और गरिमा की पुनर्स्थापना

शिक्षण केवल आजीविका अर्जित करने का साधन नहीं; अपितु समाज और राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करने वाला एक महान दायित्व एवं मिशन है। शिक्षक वह सृजनकर्ता है जो ज्ञान, संस्कार, मूल्य और जीवन-दृष्टि के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को आकार देता है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता, प्रतिबद्धता और पेशेवर गरिमा पर निर्भर करती है। यही कारण है किविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCFSE-2023) शिक्षक को

शिक्षा प्रणाली का केंद्रीय स्तंभ मानते हुए उसकी पेशेवर पहचान और सामाजिक प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना को शिक्षा सुधार का अनिवार्य आधार स्वीकार करती है।

पिछले कुछ दशकों में शिक्षकों की भूमिका अनेक प्रशासनिक, गैर-शैक्षणिक और औपचारिक दायित्वों से प्रभावित हुई है। परिणामस्वरूप उनके पेशेवर निर्णयों की स्वायत्तता, सामाजिक सम्मान तथा रचनात्मक कार्यक्षमता में कमी अनुभव की गई है। अनेक अवसरों पर शिक्षक को एक स्वतंत्र पेशेवर के बजाय केवल निर्देशों का पालन करने वाले कर्मचारी के रूप में देखा जाने लगा। इससे शिक्षण की गुणवत्ता के साथ-साथ शिक्षक के आत्मविश्वास, प्रेरणा और नवाचार की भावना पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023इस स्थिति को बदलने की आवश्यकता पर विशेष बल देती है और शिक्षक को पुनः एक सम्मानित, सक्षम और उत्तरदायी पेशेवर के रूप में स्थापित करने की स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत करती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023के अनुसार, शिक्षक सशक्तिकरण का प्रथम आधार उनकीपेशेवर स्वायत्ताहै। शिक्षक को स्थानीय संदर्भ, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा अधिगम की प्रकृति के अनुरूप शिक्षण रणनीतियों, गतिविधियों और मूल्यांकन विधियों के चयन की स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए। यह स्वायत्तता शिक्षक की रचनात्मकता, नवाचार और उत्तरदायित्व को बढ़ाती है तथा उसे केवल पाठ्यक्रम के निष्पादक के स्थान पर अधिगम के डिज़ाइनर के रूप में स्थापित करती है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 शिक्षकों केसतत व्यावसायिक विकास(Continuous Professional Development-CPD) को भी उनकी पेशेवर गरिमा का अभिन्न अंग मानती है। शिक्षक का विकास किसी एक प्रशिक्षण कार्यक्रम तक सीमित नहीं हो सकता; बल्कि यह तो जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। इसलिए शिक्षकों के लिए गुणवत्ता-आधारित, संदर्भ-संवेदनशील, आवश्यकता-आधारित तथा विद्यालय-केंद्रित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था करने पर बल दिया गया है। सतत अधिगम के माध्यम से शिक्षक नवीन शिक्षण-पद्धतियों, डिजिटल प्रौद्योगिकी, समावेशी शिक्षा, बहुभाषिक शिक्षण तथा वैकल्पिक मूल्यांकन प्रणालियों से स्वयं को अद्यतन रख सकते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्षशिक्षकों की निर्णय प्रक्रिया में सार्थक भागीदारीसुनिश्चित करना है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023यह मानती है कि शिक्षा संबंधी नीतियों, पाठ्यचर्या, मूल्यांकन तथा विद्यालयी नवाचारों के निर्माण और क्रियान्वयन में शिक्षकों की सक्रिय सहभागिता होनी चाहिए। जो व्यक्ति प्रतिदिन विद्यार्थियों के साथ कार्य करता है, वही उनकी वास्तविक आवश्यकताओं और शिक्षण की चुनौतियों को सबसे बेहतर ढंग से समझ सकता है। इसलिए शिक्षक की आवाज़ को नीति-निर्माण और शैक्षिक सुधारों का अभिन्न हिस्सा बनाया जाना

आवश्यक है।इसके साथ ही, विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023शिक्षकों केकार्यभार के युक्तिकरणपर विशेष बल देती है। शिक्षकों को गैर-शैक्षणिक कार्यों और अनावश्यक प्रशासनिक दायित्वों से यथासंभव मुक्त कर उनका समय और ऊर्जा शिक्षण, विद्यार्थियों के मार्गदर्शन, अधिगम सामग्री के विकास तथा आत्मचिंतन में लगाने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। जब शिक्षक अपनी मूल भूमिका पर पूर्ण ध्यान केंद्रित कर सकेगातभी शिक्षा की गुणवत्ता में वास्तविक सुधार संभव होगा।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023प्रेरक और विकासोन्मुख मूल्यांकन प्रणालीकी भी वकालत करती है। शिक्षक का मूल्यांकन दंडात्मक या नियंत्रणकारी दृष्टिकोण से नहीं; अपितु उसके व्यावसायिक विकास और उत्कृष्ट कार्य को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए। निष्पादन (Performance), नवाचार, सहयोगात्मक कार्य, विद्यार्थियों की प्रगति तथा आत्ममूल्यांकन के आधार पर शिक्षक को उचित पहचान, प्रशंसा और उन्नति के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। ऐसी व्यवस्था शिक्षकों में आत्मविश्वास, उत्तरदायित्व और उत्कृष्टता की संस्कृति को प्रोत्साहित करेगी।

इस प्रकार, विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023शिक्षक की गरिमा की पुनर्स्थापना को केवल एक वैचारिक घोषणा तक सीमित नहीं रखती; अपितु उसके लिए ठोस, व्यावहारिक और क्रियान्वयन योग्य उपाय प्रस्तुत करती है। यह शिक्षक को एक सम्मानित पेशेवर समुदाय का सदस्य मानते हुए उसके अनुभव, विशेषज्ञता, दृष्टिकोण और नवाचार को शिक्षा प्रणाली की अमूल्य पूँजी के रूप में स्वीकार करती है। निस्संदेह, यह दृष्टिकोण शिक्षकों के आत्मसम्मान, व्यावसायिक प्रतिबद्धता और नेतृत्व क्षमता को सुदृढ़ करेगा तथा विद्यालयी शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण, नवाचारी, समावेशी और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

शिक्षकों के लिए सहयोगात्मक और अधिगम समुदाय का निर्माण

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023इस विचार को प्रोत्साहित करती है कि शिक्षक अकेले नहीं; अपितु एक सहयोगी समुदाय का हिस्सा हैं। यह सहयोगात्मक संस्कृति शिक्षकों को एक-दूसरे से सीखने, अपने अनुभव साझा करने, समस्याओं के समाधान के लिए सामूहिक रूप से विचार करने और नवाचारों को अपनाने का अवसर प्रदान करती है।इस पाठ्यचर्यारूपरेखा में "स्कूल एक लर्निंग ऑर्गेनाइज़ेशन" की संकल्पना को बल देते हुए यह अपेक्षा की गई है कि शिक्षकों को समय, स्थान और मंच मिले जहाँ वे परस्पर संवाद, सहयोग और सह-निर्माण कर सकें। इसके लिए विद्यालयों को एक ऐसे केंद्र के रूप में विकसित करना आवश्यक होगा जहाँ शिक्षक नियमित रूप से आत्ममंथन कर सकें, साझा चिंतन कर सकें और अपने शिक्षण में नवाचार ला सकें।इस सहयोगात्मकता में

तकनीकी मंचों की भी बड़ी भूमिका है। शिक्षक पोर्टलों, ऑनलाइन नेटवर्क और शैक्षिक मंचों पर जुड़कर राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर ज्ञान का आदान-प्रदान कर सकते हैं। इससे न केवल उनकी व्यक्तिगत दक्षता बढ़ती है; अपितु शिक्षा की गुणवत्ता में भी व्यापक सुधार होता है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023शिक्षकों के बीच 'प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटीज' (PLCs) की स्थापना को बढ़ावा देती हैजहाँ शिक्षक औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से जुड़कर शिक्षण की रणनीतियों, मूल्यांकन के तरीकों और कक्षा प्रबंधन की चुनौतियों पर विचार कर सकते हैं। इससे न केवल उन्हें भावनात्मक और व्यावसायिक समर्थन मिलता है;बल्कि वे एक-दूसरे की प्रेरणा बनते हैं।इस प्रकार, सहयोगात्मक अधिगम संस्कृति न केवल शिक्षकों को सक्षम बनाती है; अपितु शिक्षा प्रणाली को अधिक लोकतांत्रिक, उत्तरदायी और नवाचारी भी बनाती है।

शिक्षक तैयारी एवं सतत व्यावसायिक विकास (CPD): एक संगठित, समावेशी एवं प्रभावी रूपरेखा

विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता का सबसे महत्वपूर्ण आधार एक सक्षम, प्रशिक्षित, प्रेरित और सतत सीखने वाला शिक्षक होता है। शिक्षा व्यवस्था में चाहे जितने भी पाठ्यचर्या सुधार, नवीन शिक्षण-पद्धतियाँ अथवा तकनीकी नवाचार क्यों न किए जाएँ, उनकी वास्तविक सफलता अंततः शिक्षक की दक्षता, दृष्टि और व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर ही निर्भर करती है। इसी तथ्य को स्वीकार करते हुएविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023शिक्षक-तैयारी औरसतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development-CPD)को शिक्षक सशक्तिकरण का आधारभूत स्तंभ मानती है। यह रूपरेखा स्पष्ट रूप से प्रतिपादित करती है कि शिक्षक-प्रशिक्षण किसी एक बार संपन्न होने वाली प्रक्रिया नहीं; अपितु एकसतत, गतिशील, चिंतनशील और जीवनपर्यंत चलने वाली अधिगम यात्राहै। एक प्रभावी शिक्षक वही है जो बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और शैक्षिक परिवेश के अनुरूप स्वयं को निरंतर अद्यतन करता रहे तथा नवीन ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को अपने शिक्षण व्यवहार का अभिन्न अंग बनाए।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023के अनुसार शिक्षक-तैयारी का उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं है;बल्कि ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है जो विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझ सकें, समावेशी एवं बाल-केंद्रित शिक्षण वातावरण का निर्माण कर सकें, स्थानीय संदर्भों को अधिगम से जोड़ सकें तथा आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करने में सक्षम हों। इस दृष्टि से शिक्षक-तैयारी को केवल पूर्व-सेवा (Pre-service) प्रशिक्षण तक सीमित न रखकरपूर्व-सेवा और सेवाकालीन (In-service) प्रशिक्षण के समन्वित मॉडलके

रूप में विकसित करने पर बल दिया गया है। शिक्षक के व्यावसायिक विकास को एक निरंतर प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करते हुए यह रूपरेखा सीखने की ऐसी संस्कृति विकसित करने का आह्वान करती हैजिसमें प्रत्येक शिक्षक स्वयं भी एक आजीवन शिक्षार्थी बना रहे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023यह भी स्पष्ट करती है कि वर्तमान समय में केवल बी.एड. अथवा प्रारंभिक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए पर्याप्त नहीं हैं। शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर हो रहे परिवर्तन, डिजिटल प्रौद्योगिकी का बढ़ता प्रभाव, बहुभाषिक एवं समावेशी कक्षाओं की चुनौतियाँ तथा दक्षता-आधारित अधिगम की अपेक्षाएँ शिक्षकों से निरंतर सीखने और स्वयं को विकसित करने की माँग करती हैं। इसलिए सेवा में रहते हुए शिक्षकों मेंआत्ममूल्यांकन, आत्मचिंतन (Reflective Practice), अनुसंधान, नवाचार, सहकर्मी अधिगम तथा व्यावसायिक सहयोगकी संस्कृति विकसित करना आवश्यक है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों को स्थानीय भाषा, संस्कृति, सामाजिक संदर्भ तथा विद्यार्थियों की विविध पृष्ठभूमियों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए, ताकि शिक्षक अपने विद्यालयीय परिवेश में अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर सकें।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023अनेक व्यावहारिक और दूरदर्शी उपाय प्रस्तुत करती है। सबसे पहले, यहमॉड्यूल आधारित प्रशिक्षण प्रणालीपर बल देती हैजिसके अंतर्गत शिक्षकों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, विषयगत विशेषज्ञता, कक्षागत चुनौतियों तथा अंतरविषयक आवश्यकताओं के अनुरूप लचीले प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित किए जाएँ। इससे शिक्षक अपनी रुचि, आवश्यकता और व्यावसायिक लक्ष्य के अनुसार प्रशिक्षण का चयन कर सकेंगे तथा प्रशिक्षण अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बन सकेगा।

दूसरा महत्वपूर्ण आयामशिक्षकों की एजेंसी (Teacher Agency)को सुदृढ़ करना है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023यह स्वीकार करती है कि शिक्षक अपने व्यावसायिक विकास के केवल लाभार्थी नहीं;बल्कि उसके सक्रिय निर्माता हैं। इसलिए उन्हें यह स्वतंत्रता और अवसर मिलना चाहिए कि वे अपनी आवश्यकताओं का स्वयं विश्लेषण करें, प्रशिक्षण के क्षेत्रों का चयन करें तथा अपने अधिगम की दिशा और गति निर्धारित करें। यह दृष्टिकोण शिक्षकों में उत्तरदायित्व, आत्मनिर्भरता और व्यावसायिक आत्मविश्वास का विकास करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 का तीसरा महत्त्वपूर्ण पक्षव्यावसायिक अधिगम समुदायों (Professional Learning Communities-PLCs)की स्थापना है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023इस बात पर बल देती है कि शिक्षक का विकास अलग-थलग रहकर नहीं;बल्कि सहयोगात्मक अधिगम संस्कृति में अधिक प्रभावी ढंग से होता है। विद्यालयों और संकुलों में ऐसे अधिगम समुदाय विकसित किए जाने चाहिएजहाँ शिक्षक नियमित रूप से अपने अनुभव साझा

करें, शिक्षण रणनीतियों पर विचार-विमर्श करें, नवाचारों का आदान-प्रदान करें, कक्षा-अनुभवों का विश्लेषण करें तथा एक-दूसरे से सीखने की संस्कृति विकसित करें। यह सहयोगात्मक वातावरण शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को निरंतर गति प्रदान करता है और विद्यालयों को वास्तविक अर्थों में'लर्निंग ऑर्गेनाइज़ेशन'के रूप में विकसित करता है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023प्रौद्योगिकी के प्रभावी एवं सार्थक उपयोगको भी सतत व्यावसायिक विकास(CPD)का अभिन्न अंग मानती है। डिजिटल मंचों; जैसे-DIKSHA, NISHTHA, ई-सामग्री, वेबिनार, ऑनलाइन पाठ्यक्रम तथा अन्य डिजिटल अधिगम संसाधनोंके माध्यम से शिक्षकों को कहीं भी, कभी भी और अपनी सुविधा के अनुसार सीखने के अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी न केवल प्रशिक्षण को अधिक सुलभ और लचीला बनाती है;बल्कि शिक्षकों को राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर के शैक्षिक संसाधनों, विशेषज्ञों और नवाचारों से भी जोड़ती है। इस प्रकार प्रौद्योगिकी शिक्षक के व्यावसायिक विकास को अधिक व्यापक, समावेशी और प्रभावशाली बनाती है।

रूपरेखा का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्षनिरंतर मूल्यांकन एवं मार्गदर्शनहै। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023यह स्पष्ट करती है कि सतत व्यावसायिक विकास (CPD)की सफलता केवल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने से सुनिश्चित नहीं होती;बल्कि उसकी गुणवत्ता का नियमित मूल्यांकन और आवश्यक मार्गदर्शन भी उतना ही आवश्यक है। इसके लिए प्रतिबिंबात्मक लेखन (Reflective Journals), शिक्षण पोर्टफोलियो, सहकर्मी अवलोकन (Peer Observation), संरचित फीडबैक, मेंटरिंग तथा विद्यालय-आधारित समर्थन तंत्र को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। इस प्रकार का विकासोन्मुख मूल्यांकन शिक्षकों को अपनी शक्तियों और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता करता है तथा उन्हें निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करता है।

अतः यह कहा जा सकता है किविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023में प्रस्तावितसतत व्यावसायिक विकास (CPD)की अवधारणा शिक्षक-प्रशिक्षण को एक नई दिशा प्रदान करती है। यह शिक्षक को केवल प्रशिक्षण प्राप्त करने वाला व्यक्ति नहीं;बल्किआजीवन शिक्षार्थी, चिंतनशील व्यावसायिक, नवाचारकर्ता, सहयोगी अधिगमकर्ता तथा परिवर्तनकारी नेतृत्वकर्ताके रूप में विकसित करने का व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। वस्तुतः विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023की यह रूपरेखा शिक्षक के व्यावसायिक विकास को शिक्षा सुधार का केंद्रबिंदु मानते हुए ऐसी अधिगम संस्कृति की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करती हैजो न केवल शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाती है; अपितु सम्पूर्ण विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था को अधिक गुणवत्तापूर्ण, समावेशी, नवाचारी और भविष्य उन्मुख बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शिक्षकों की स्वायत्तता और निर्णय लेने की क्षमता का विस्तार

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023में यह स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है कि शिक्षण एक जटिल, बौद्धिक एवं नैतिक कार्य हैजिसके लिए शिक्षकों को पर्याप्त स्वायत्तता और निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। स्वायत्तता का आशय केवल पाठ्यवस्तु चयन की स्वतंत्रता से नहीं है;अपितु यह शिक्षण-पद्धति, मूल्यांकन-प्रणाली, कक्षा प्रबंधनऔर स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार पाठ योजनाएँ तैयार करने जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों को भी सम्मिलित करता है।यह रूपरेखा शिक्षकों को 'पारदर्शी जवाबदेही' के साथ 'वैयक्तिक एवं पेशेवर निर्णय' लेने का अधिकार देती है। इससे न केवल उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है;बल्कि वे कक्षा में नवाचार, संदर्भ-संवेदनशीलता और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण रणनीतियाँ विकसित कर सकते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023में स्वायत्तता को केवल अधिकार के रूप में नहीं; बल्किउत्तरदायित्व के रूप में भी देखा गया है। शिक्षक जब अपने निर्णयों के परिणामों को समझते हैं, तब वे अधिक उत्तरदायी, संवेदनशील और प्रेरित बनते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि स्कूल नेतृत्व और शैक्षिक प्रशासन उन्हें प्रयोग करने, विफल होने और उससे सीखने के अवसर दें।इसके साथ हीविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023इस विचार को भी बढ़ावा देती है कि शिक्षक अपने कार्यक्षेत्र के विश्लेषक, समीक्षक और शोधकर्ता भी हों। उन्हें शिक्षण से जुड़े आंकड़ों, विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं और कक्षा की जमीनी सच्चाइयों के आधार पर निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।शिक्षकों की यह स्वायत्तता उनके पेशेवर विकास के साथ-साथ विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में भी गुणात्मक सुधार लाने की क्षमता रखती है।

नेतृत्व की भूमिका में शिक्षक

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCFSE-2023)शिक्षक की भूमिका को केवल कक्षा-कक्ष तक सीमित नहीं मानती; अपितु उसे विद्यालयी परिवर्तन, शैक्षिक नवाचार और सामाजिक विकास के एक प्रभावीनेतृत्वकर्ता (Educational Leader)के रूप में स्थापित करती है। यह रूपरेखा स्पष्ट रूप से प्रतिपादित करती है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल प्रभावी शिक्षण से ही नहीं;बल्कि ऐसे शिक्षकों से संभव है जो नेतृत्व क्षमता से युक्त हों, परिवर्तन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हों तथा अपने ज्ञान, अनुभव और नवाचारों के माध्यम से सम्पूर्ण विद्यालय समुदाय को प्रेरित कर सकें।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023के अनुसार शिक्षक का नेतृत्व किसी प्रशासनिक पद या औपचारिक अधिकार तक सीमित नहीं है। वास्तविक नेतृत्व का अर्थ है- शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु पहल करना, विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के अनुरूप नवीन शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करना, सहकर्मी शिक्षकों का मार्गदर्शन करना, विद्यालय की शैक्षिक संस्कृति को समृद्ध बनाना तथा समुदाय और विद्यालय के मध्य सशक्त संबंध स्थापित करना। इस प्रकार शिक्षक का नेतृत्वविद्यालय, संकुल (School Complex), स्थानीय समुदाय, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तरतक प्रभावी भूमिका निभा सकता है।रूपरेखा यह भी स्पष्ट करती है कि एक प्रभावी शिक्षक-नेता विद्यालय मेंसहयोगात्मक, समावेशी और लोकतांत्रिक संस्कृतिका निर्माण करता है। वह केवल अपने कक्षागत शिक्षण तक सीमित नहीं रहता;बल्कि सहकर्मियों के साथ अनुभवों का आदान-प्रदान करता है, नवाचारों को साझा करता है, व्यावसायिक अधिगम समुदायों (Professional Learning Communities–PLCs) को सुदृढ़ बनाता है तथा विद्यालय में निरंतर सुधार की संस्कृति विकसित करता है। ऐसा वातावरण शिक्षकों में पारस्परिक विश्वास, सामूहिक उत्तरदायित्व और साझा नेतृत्व की भावना को प्रोत्साहित करता है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023इस बात पर विशेष बल देती है कि शिक्षक-नेतृत्व का विकासपेशेवर स्वायत्तता, सतत व्यावसायिक विकास (CPD), सहयोगात्मक नेटवर्क, मार्गदर्शन (Mentoring) तथा संस्थागत समर्थनके माध्यम से किया जाना चाहिए। जब शिक्षकों को अपने विचार व्यक्त करने, निर्णय लेने, नवाचार करने तथा शैक्षिक मंचों पर सक्रिय भागीदारी का अवसर मिलता है, तब वे केवल पाठ्यक्रम के क्रियान्वयनकर्ता नहीं रहते;बल्कि शिक्षा सुधार की प्रक्रिया के सह-निर्माता बन जाते हैं। उनके अनुभव और सुझाव पाठ्यचर्या विकास, शिक्षण-पद्धतियों, मूल्यांकन सुधार तथा विद्यालयी नीतियों को अधिक यथार्थवादी और प्रभावी बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

इस प्रकार, विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023शिक्षक को केवल ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति के रूप में नहीं;बल्किपरिवर्तन के संवाहक (Agent of Change), नवाचार के प्रेरक (Catalyst of Innovation) और शैक्षिक नेतृत्व के वाहकके रूप में देखती है। एक सशक्त शिक्षक-नेता न केवल विद्यार्थियों के अधिगम को समृद्ध बनाता है;बल्कि विद्यालय की संस्कृति को अधिक मानवीय, समावेशी, उत्तरदायी और नवाचारशील बनाता है। वस्तुतः शिक्षक-नेतृत्व ही वह शक्ति है जो विद्यालयों को उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करती है और शिक्षा को समाज में सकारात्मक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बनाती है।

शिक्षक सशक्तिकरण की चुनौतियाँ और समाधान

यद्यपिविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023शिक्षक सशक्तिकरण की दिशा में एक सशक्त और दूरदर्शी दस्तावेज़ है लेकिनफिर भी इसके सफल क्रियान्वयन में अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ सामने आती हैं। इन चुनौतियों का सही विश्लेषण और समाधान की दिशा में ठोस प्रयास ही इस रूपरेखा को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023के संदर्भ में शिक्षक सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियाँ और उनसे संबंधित समाधान इस प्रकार हैं-

1. **संसाधनों की असमानता और अधोसंरचना की कमी-** ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में अभी भी विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं; जैसे- पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, डिजिटल उपकरण और प्रशिक्षकों की उपलब्धता अपर्याप्त है। जब तक शिक्षकों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध नहीं होंगे; तब-तकवे अपनी भूमिका को प्रभावी ढंग से नहीं निभा सकते।

- **समाधान:**सरकार को राज्य और ज़िला स्तर पर संसाधनों के वितरण की असमानता को दूर करने के लिए विशेष योजनाएँ बनानी होंगी। स्कूलों में आईसीटी (ICT)लैब, पुस्तकालय और प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना को प्राथमिकता देनी होगी।

2. **प्रशासनिक दवाब और गैर-शैक्षणिक कार्यभार-** शिक्षकों को विभिन्न गैर-शैक्षणिक कार्यों; जैसे- सर्वेक्षण, जनगणना, चुनाव आदि में लगाना उनके शिक्षण कार्य को बाधित करता है। जिसके कारण वे शिक्षण में मनोयोगपूर्वक ध्यान नहीं दे पातेतथा समूची शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया प्रभावित होती है।

- **समाधान:**विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023के अनुसार शिक्षकों को केवल शैक्षणिक कार्य में संलग्न रखना चाहिए। प्रशासनिक आदेशों और शैक्षिक हितों के बीच संतुलन स्थापित करने हेतुस्पष्ट दिशा-निर्देश और नीति निर्माताओं की प्रतिबद्धता आवश्यक है।

3. **सतत व्यावसायिक विकास के लिए समय और प्रेरणा की कमी-** कई शिक्षक सतत व्यावसायिक विकास(CPD)को सिर्फ एक औपचारिकता भर मानते हैं या उनके पास इसमें संलग्न होने का समय नहीं होता। इसके अलावा इस संदर्भ मेंप्रेरणा की कमी भी एक बहुत बड़ी बाधा है।

- **समाधान:**सतत व्यावसायिक विकास(CPD)कार्यक्रमों को शिक्षक-केंद्रित, प्रेरक और व्यावहारिक बनाने कीज़रूरत है। विद्यालयों में "अधिगम के लिए समय" की व्यवस्था, कार्यावधि के भीतर प्रशिक्षण का आयोजन और नवाचारों को सम्मानित करने की संस्कृति विकसित करना अति आवश्यक है।

4. **मूल्यांकन प्रणाली में पारदर्शिता की कमी-** मूल्यांकन प्रणाली में पारदर्शिता की कमी शिक्षक सशक्तिकरण के मार्ग में एक प्रमुख चुनौती है। प्रत्येक शिक्षक मूल्यांकन अपने तरीके से करता है तथा बहुत-से शिक्षक मूल्यांकन को दंडात्मक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं ।मूल्यांकन प्रणाली में पारदर्शिता की कमीके कारण उनकी रचनात्मकता और आत्मविश्वास प्रभावित होता है।

- **समाधान:**प्रेरक मूल्यांकन प्रणाली, समकक्षों के सहयोग से फीडबैक, स्वयंमूल्यांकन, पोर्टफोलियो आधारित मूल्यांकन को बढ़ावा देना चाहिए। यह शिक्षक की भूमिका को विकासशील और सहयोगात्मक बनाएगा।

5. नीति और कार्यान्वयन के बीच अंतर- प्रायः नीति दस्तावेज़ों में जो बातें कही जाती हैं, वे अक्सर ज़मीनी स्तर पर उस रूप में क्रियान्वित नहीं हो पातीं। नीतियों का ज़मीनी स्तर पर सही तरह से क्रियान्वित न हो पाने की वजह से शिक्षक सशक्तिकरण से संबंधित प्रयासों में कमी आती है अर्थात् संबंधित प्रयासों को उचित गति नहीं मिल पाती।

- **समाधान:**विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023के क्रियान्वयन के लिए एक सशक्त निगरानी तंत्र की स्थापना होनी चाहिए। विद्यालयों, जिला शिक्षा कार्यालयों और राज्य स्तरीय संस्थानों में नियमित मूल्यांकन, फीडबैक संग्रह और सुधारात्मक हस्तक्षेप की व्यवस्था बनाई जानी चाहिए।

निष्कर्ष- उपरोक्त विवेचना के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है किविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023शिक्षक सशक्तिकरण की दिशा में एक दूरदर्शी, समग्र और क्रांतिकारी पहल है। यह दस्तावेज़ शिक्षकों को केवल एक शैक्षणिक संसाधन भर नहीं मानता;बल्कि उन्हें अधिगम की प्रक्रिया के सह-निर्माता, नेतृत्वकर्ता और परिवर्तन के संवाहक के रूप में प्रतिष्ठित करता है।शिक्षकों की भूमिका कानवपरिभाषिकरण, उनकी पेशेवर गरिमा की पुनर्स्थापना, सहयोगात्मक अधिगम संस्कृति का निर्माण, सतत व्यावसायिक विकास की संगठित रूपरेखा, स्वायत्तता और नेतृत्व के अवसरये सभी तत्व शिक्षक को एक सक्रिय, जागरूक और उत्तरदायी पेशेवर में रूपांतरित करने की दिशा में कार्य करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया का उद्देश्य शिक्षकों के माध्यम से विद्यार्थियों को सशक्त, संवेदनशील, रचनात्मक और उत्तरदायी नागरिक के रूप में तैयार करना है। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है किविद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023की एक स्पष्ट दृष्टि है कि जब तक शिक्षक सक्षम और प्रेरित नहीं होंगे;तब तक किसी भी शैक्षिक सुधार की कल्पना अधूरी रहेगी। इसलिए आवश्यकता इस बात कि है कि शिक्षकों को आवश्यक संसाधन, प्रशिक्षण, स्वतंत्रता और सामाजिक सम्मान आदि प्रदान किया जाएतथा साथ हीनीति और क्रियान्वयन के मध्य की दूरी को पाटने के लिए निरंतर संवाद, फीडबैक और सुधार की प्रक्रिया को अपनाया जाए।शिक्षक सशक्तिकरण कोई एक बार घटित होने वाली घटना नहीं; अपितुयह तो एक सतत प्रक्रिया हैजिसमें सरकार, शैक्षिक संस्थान, समुदाय और स्वयं शिक्षक सभी की सहभागिता अनिवार्य है। यदि इस भागीदारी और प्रतिबद्धता को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाएतोविद्यालयी शिक्षा के

लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023न केवल शिक्षकों के लिए एक नई सुबह का संदेश होगा; अपितु सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को जीवंत, संवेदनशील और भविष्योन्मुखी बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम सिद्ध होगा।

ग्रंथसूची/संदर्भ

1. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय.
2. एनसीईआरटी. (2023). *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी.
3. भारत सरकार. (2023). *शिक्षक पोर्टल: दीक्षा (DIKSHA)*. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय.
4. Ministry of Education, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. New Delhi: Government of India.
5. NCERT. (2023). *National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE 2023)*. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
6. NCTE. (2021). *National Professional Standards for Teachers (NPST)*. New Delhi: National Council for Teacher Education.
7. NCERT. (2022). Guidelines for Teacher Training and Professional Development: 50 Hours CPD. New Delhi: National Council of Educational Research and Training. (Web source: Guidelines for 50 Hours of Continuous Professional Development): content Reference [oaicite: 9]{index=9}.
8. Ministry of Education, Government of India. (2022). Initiatives for Quality Improvement in Education through Teacher Empowerment. New Delhi: Government of India. (Web source: DIKSHA app details): content Reference [oaicite:10]{index=10}.
9. Government of India, Ministry of Education. (2023). Teacher Portal: DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing). New Delhi: Ministry of Education. (Web source: DIKSHA platform overview): content Reference [oaicite: 11]{index=11}.
10. NCERT. (2020). Redefining Relationships between Students and Teachers. New Delhi: National Council of Educational Research and Training. (Web source: NCERT guidelines listing): contentReference [oaicite:12]{index=12}.